श्राद्ध पक्ष पर विशेष

आप पितरों को श्राद्ध दें, वे आपको शक्ति देंगे।

पितृपक्ष का हिन्दू धर्म व संस्कृति में विशिष्ट स्थान है, जो हिन्दू पितरों के नाम पर श्राद्ध व पिंडदान तर्पण आदि नहीं करता वह सनातन धर्मी हिन्दू नहीं कहा जा सकता।

हमारे शास्त्रों में तीन प्रकार के शरीर माने गये है :–

1. स्थूल 2. सूक्ष्म 3. कारण शरीर।

स्थूल शरीर हमें दिखाई देता है, यह शरीर पार्थिक अणु संकुलन से बना है, जिसे स्पर्श व अनुभव कर सकते है।

दूसरा शरीर सूक्ष्म है, जो हल्का होता है व सूक्ष्म परमाणुओं से बना होता है। इस शरीर में गर्मी–सर्दी, वर्षा, सुख–दुख का अनुभव स्थूल शरीर की ही भांति होता है। किन्तु इस शरीर के पोषण के लिये अन्न की नहीं विचार व भावों की आवश्यकता है। पितर भी सूक्ष्म शरीर धारी हमारे पूर्वज ही है या इन्हें हम प्रकाश स्वरुप भी कह सकते है। जगद्गुरु शंकराचार्य ने भी अपने सूक्ष्म शरीर से ही माहिष्मती के मृत राजा के शरीर में प्रविष्ट होकर कामकला का ज्ञान प्राप्त किया था। संत एकनाथ के यहां श्राद्ध के दिनों में ब्राम्हणों ने भोजन करने से इंकार कर दिया था। तब संत एकनाथ ने अपने पितरों का आव्हान कर उन्हें साक्षात में भोजन कराया था। इस घटना ने एकनाथ को चमत्कारी सिद्व कर दिया।

श्राद्ध, तर्पण व पिंडदान पितरों के नाम पर ही किये जाते हैं। इस समय अन्न व वस्त्रों का दान भी किया जाता है। वर्ष में जिन तिथियों में पितरों की मृत्यु हुई हो, उस दिन श्राद्ध किया जाता है। चूंकि इन दिनों कन्या का सूर्य होता है। इसलिये ''कन्यार्क'' का अपभ्रंश ''कनागत'' नाम प्रचालित हो गया। पूर्वजों, गुरुजनों द्वारा किये गये उपकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना ही श्राद्ध कर्म है। हम पितरों को भुला न दें। अतः श्राद्ध कर्म हर वर्ष कनागतों में किया जाता है।

पितृयोनियों के चार वर्ग पितर, मुक्त, देव और प्रजापति ये स्थूल शरीर से मुक्त सूक्ष्म शरीरधारी हैं। अतः ये शरीरधारियों एवं पंचतत्वों से बनी वस्तुओं व पदार्थो को प्रभावित कर सकते है।

हिन्दू शास्त्रों के अनुसार मृत्यु के बाद जीवात्मा चन्द्रलोक की तरफ जाते हुये ऊँचा उठकर पितृलोक की तरफ जाती है। इन मृतात्माओं को नियत लोक तक पहुंचने में शक्ति प्रदान करने के लिये पिंडदान व श्राद्ध का विधान है। श्राद्ध में पितरों के नाम पर ब्राम्हणों को भोजन कराया जाता है व वस्त्र आदि दान किये जाते है, जिसके पुण्य फल से पितरों का संतुष्ट होना माना गया है।

श्रद्वा से श्राद्ध बना है। श्रद्वा पूर्वक किये कार्य को श्राद्ध कहते है। श्राद्ध से श्रद्वा जीवित रहती है। पितरों को श्रद्वा देने हेतु श्राद्ध करना हमारे पूर्वजों ने वर्ष में 15 दिन कनागत के रुप में निश्चित किये है। इन दिनों यथाशीघ्र पितरों को निमित दान–पुण्य करना चाहिये।

एक समय देश में श्राद्ध कर्म का इतना प्रचार था कि, लोग अपनी सुध–वुध खोकर भी श्राद्ध कर्म करते थे। उन्हें बाल बनवाने, तेल लगाने तक का अवकाश नहीं मिलता था।

यहां तार्किक वुद्वि प्रश्न उठाती है कि, मरे हुये व्यक्तियों को श्राद्ध कर्म से कुछ लाभ होता भी है या नहीं ? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि, इससे लाभ अवश्य होता है। जैसे संसार एक समुद्र के समान है, जिसमें जल के कणों की भांति हर जीव है। यदि विश्व एक शिला है, तो व्यक्ति एक परमाणु जीवित व मृत सभी आत्मायें इस विश्व में मौजूद है और एक दूसरे से सम्पर्क बनाये हुये है। संसार में कहीं भी युद्व, अनीति, अत्याचार, अनाचार या कष्ट हो रहे हों, तो सुदूर देशवासियों के मन में भी उद्वेग उत्पन्न होता है। जाड़े व गर्मी के मौसम में चीज ठंडी व गर्म हो जाती है। छोटे से यज्ञ की गंध व भावनायें संसार के हर प्राणी को लाभ पहुंचाती व दिव्य अनुदान प्रदान करती है। उसी तरह श्राद्ध पक्ष में पितरों के लिये दी गई श्रद्वा से व सदभावनायें सभी को तृप्त करती हैं। परंतु अधिकांश भाग उन्हीं को पहुंचता है, जिनके लिये ये श्राद्ध किया गया हो। विचार व भाव सूक्ष्म रुप से शीघ्र ही पितरों तक पहुंचती है।

मृत आत्माओं व पितरों के प्रति मनुष्य को वैसा ही भाव रखना चाहिये जैसा देव, प्रजापतियों के प्रति होता है। पितरों को स्थूल सहायता की नहीं सूक्ष्म भावात्मक सहायता की ही आवश्यकता होती है, क्योंकि वे सूक्ष्म शरीर में ही अवस्थित होते है।

आज श्राद्ध का प्रचलित रुप ब्राम्हण भोजन मात्र रह गया है पर ऐसी बात नहीं है। सामयिक आवश्यकता को देखते हुये वृक्षारोपण जैसे कार्य भी किये जा सकते है व श्राद्ध रुप में ऐसे वृक्ष, लगाये जाये जो किसी न किसी रुप में प्राणियों की आवश्यकता पूरी करते हों चाहे वह फलफूल के रुप में हो या छाया, पशुओं के भोजन के रुप में।

निष्कर्षतः यही कहूंगी कि, यदि पितरों को सच्ची श्रद्वा दी जायेगी, उन्हें तृप्त रखा जायेगा तो वे हमें निश्चित ही शक्ति, प्रकाश, मार्ग दर्शन व प्रेरणा देंगे साथ ही सहयोगात्मक अनुदान भी प्राप्त होते रहेंगे।

डॉ. श्रीमति कुसुम गुप्ता,
21, गायत्री नगर, ग्वालियर

.....